हरिहर काका

–मिथिलेश्वर

गद्यांश

लेखक मिथिलेश्वर का मानना है कि आजादी के बाद भी हम शोषित हो रहे हैं, केवल शोषण का तरीका बदल गया है। पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे अब हम अपनी तुच्छ मानसिकता, स्वार्थी और संकुचित विचारधारा के गुलाम हैं। 'हरिहर काका' पाठ के अंतर्गत लेखक ने हमारे समाज के एक कटु सत्य को दर्शाया है। भारतीय परिवार व्यवस्था विश्व के लिए मिसाल रही है। किंतु जब संबंधों पर स्वार्थ हावी होता है, तो व्यक्ति असंवेदनशील, कठोर और अनैतिक होता चला जाता है। इसी दुरावस्था को लेखक ने हरिहर काका नाम के एक किसान के माध्यम से दर्शाया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वर्णनात्मक प्रश्न

[3 अंक]

(50-60 शब्द)

1. हरिहर काका अनपढ़ थे लेकिन अपने अनुभव और विवेक से दुनिया को बेहतर समझते थे। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2020]

अथवा

अनपढ़ हरिहर काका अत्यधिक ज्ञानी थे। स्पष्ट कीजिए। [Diksha]

उत्तर : हरिहर काका एक अनपढ़ और भोले किसान थे। खेती-बाड़ी में व्यस्त रहते थे और जब कभी उससे समय मिलता तो गाँव की ठाकुरबारी में जाकर धार्मिक कार्यों में अपना समय व्यतीत करते थे। भाइयों के परिवार के साथ रहते हुए सीधा-सादा जीवन व्यतीत कर रहे थे। ठाकुरबारी और महंत के प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा थी किंतु समय के साथ-साथ उन्हें ऐसे अनुभव प्राप्त हुए जिन्होंने हरिहर को यह समझ दी कि कोई भी अपना नहीं होता, सब स्वार्थ के कारण साथ निभाते हैं। तब विवश होकर उन्होंने मौन धारण कर लिया, सबसे अलग एकांत में जीवन व्यतीत करने लगे। अपनी जमीन के संबंध में निर्णय लिया कि जीते जी जमीन किसी के नाम नहीं करेंगे क्योंकि जिन लोगों ने ऐसा किया था उनका जीवन पशुओं से भी बदतर हो चुका था।

2. हरिहर काका एक सीधे-साधे और भोले किसान की अपेक्षा चतुर हो चले थे। कथन के संदर्भ में 60 से 70 शब्दों में विचार व्यक्त कीजिए। [CBSE Sample Paper 2020]

उत्तर : यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि हरिहर काका एक सीधे-साधे और भोले किसान की अपेक्षा चतुर और सयाने हो गए थे। बहुत सी बातें समय और अनुभव ने उन्हें सिखा दी थीं। एक समय था जब उन्हें अपने भाइयों और उनके परिवारों से बहुत मोह था। गाँव की ठाकुरबारी और उसके महंत के प्रति भी उनके मन में अपार श्रद्धा थी। किंतु उनकी जमीन के लालच में जैसा व्यवहार महंत ने और उनके भाइयों ने उनके साथ किया, धार्मिक और पारिवारिक झंझावातों से गुजरने से, अपनों द्वारा दुख पहुँचाने से वे जान गए थे कि वास्तव में किसी को उनकी परवाह नहीं है। सबकी नजर उनकी जमीन पर है और जिस दिन उन्होंने वह जमीन किसी के नाम कर दी तो कोई उन्हें पूछेगा भी नहीं। सामाजिक उदाहरणों और अनुभव से सीख लेकर उन्होंने जीते जी किसी को भी जमीन न देने का फैसला कर लिया था और अपना आगे का समय एकांत में, शांतिपूर्वक बिताना चाहा।

3. हरिहर काका के साथ उनके भाइयों तथा ठाकुरबारी के महंत ने कैसा व्यवहार किया? क्या आप उसे उचित मानते हैं? कारण सहित स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2019]

उत्तर : हरिहर काका का अपना कोई परिवार नहीं था। वह अपने भाइयों के परिवार के साथ खुशी-खुशी जीवन व्यतीत कर रहे थे। धीरे-धीरे उनके भाइयों के परिवार में उनका मान-सम्मान कम होता चला गया। इससे रुष्ट होकर जब उन्होंने घर से कदम निकाला तब महंत ने इस मौके का फायदा उठाते हुए उन्हें अनेक धार्मिक प्रलोभन दिए कि वे अपनी सारी जमीन ठाकुरबारी के नाम कर दें। बहलाने-फुसलाने से काम न चला तो महंत ने हरिहर का अपहरण करवा दिया और जोर-जबरदस्ती से जमीन के कागजों

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पर अँगूठे के निशान ले लिए। महंत के चंगुल से छुड़ाकर उनके भाइयों ने भी उनके साथ वही बर्ताव किया।

स्वार्थ और लालच में अंधे होकर जैसा व्यवहार महंत और उनके भाइयों ने किया, उसे किसी भी दशा में सही नहीं कहा जा सकता। यह अमानवीयता और क्रूरता अपनों के साथ तो क्या किसी के भी साथ नहीं होनी चाहिए।

4. हरिहर काका कहानी के आधार पर लिखिए कि रिश्तों की नींव मजबूत बनाने के लिए किन गुणों की आवश्यकता है और स्पष्ट कीजिए कि ऐसा क्यों जरूरी है। **[CBSE 2020]**

उत्तर : मनुष्य के जीवन में आपसी संबंधों अथवा रिश्तों का अत्यंत महत्व होता है। कुछ रिश्ते मनुष्य को उसके जन्म के साथ उपहार स्वरूप मिलते हैं, जैसे माता-पिता, भाई-बहन आदि के रिश्ते, तो कुछ वह अपनी इच्छा से बनाता है, जैसे मित्रता का रिश्ता। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए अन्य मनुष्यों के संपर्क में आने के कारण भी वह रिश्तों की डोर में स्वत: बंध जाता है, जैसे गुरु-शिष्य का रिश्ता। रिश्तों को सुदृढ़ता तभी मिल पाती है, जब उन्हें समय-समय पर स्नेह रूपी जल से सिक्त किया जाता है। विश्वास की जिस नींव पर रिश्तों का भवन खड़ा होता है, उस नींव को स्नेह रूपी जल से ही मजबूती मिल पाती है। रिश्ते हमें जोड़कर रखते हैं। संवेदनशीलता और जिम्मेदारियों का एहसास कराते हैं। रिश्तों के बिना जीवन नीरस और अधूरा है। रिश्तों की नींव जितनी मजबूत होगी यह उतने ही मधुर और शीतल बने रहेंगे। इस नींव को मजबूत बनाने के लिए सहनशीलता, धैर्य, सद्भावना, प्रेम, सहयोग और परहित का भाव होना अत्यधिक आवश्यक है। यदि हमारे रिश्ते स्वार्थ पर टिके होंगे, यदि हम दूसरों से पहले अपने सुख और आराम के लिए सोचेंगे, तो धीरे-धीरे रिश्ते कमजोर करते जाएँगे। अपने तन, मन और धन से सदा समर्पण का भाव रखना चाहिए। तन से जितनी हो सके दूसरों की सहायता करें, मन से सबका हित सोचें और प्राप्त धन सर्वहित प्रयोग में लाएँ। यही भाव रिश्तों को निखारने में मदद करते हैं। 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की भावना ही रिश्तों को मज़बूत, मधुर और स्थायी बनाती है।

5. हरिहर काका कहानी के आधार पर बताइए कि एक महंत से समाज की क्या अपेक्षा होती है? कहानी में महंतों की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए। उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिए। **[CBSE 2018]**

उत्तर : भारत-भूमि को देवभूमि भी कहा जाता है। यहाँ अनगिनत ऐसे व्यक्ति पैदा हुए हैं जिन्हें ईश्वर तुल्य मानकर हम वर्षों से पूजते आए हैं। अनेक पौराणिक कहानियाँ भी भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं जिनके प्रति भारतवासियों की अपार श्रद्धा है। लगभग हर शहर, गाँव, कस्बे और इलाके में छोटे-बड़े पूजा-स्थल स्थापित हैं जहाँ जाकर लोग अपने आराध्य के प्रति समर्पण भाव को व्यक्त करते हैं। जब कभी जीवन में कोई दुख परेशानी हो तो वहाँ जाकर अपना मन हल्का करते हैं। खुशी के मौकों पर भी वहीं जाकर धन्यवाद देते हैं। इन पूजा-स्थलों की देख-रेख के लिए कुछ लोगों की नियुक्ति की जाती है। मंदिर की सारी व्यवस्था महंत के हाथ में होती है। वहाँ आने वाले लोगों को वह धार्मिक उपदेश देता है, लोगों के साथ धर्म-चर्चाओं में शामिल होता है और उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह आवश्यकतानुसार धर्म की दृष्टि से लोगों का उचित मार्गदर्शन करे।

पाठ 'हरिहर काका' में महंत का जो रूप दिखाया गया है वह दिल दहला देने वाला है। ऐसे किस्से सुनकर लोगों के मन में मंदिरों और महंतों के प्रति आस्था डगमगा जाती है। कहते हैं 'गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है।' ऐसे महंतों की वजह से सभी के चरित्र पर दाग लग जाता है। सभी को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। अत: ऐसे पदों पर नियुक्त होने के बाद व्यक्ति को अधिक सचेत और सावधान होकर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए ताकि समाज में धार्मिक स्थलों और वहाँ के लोगों के प्रति आस्था और विश्वास बना रहे और समाज में एक सुरक्षित वातावरण स्थापित हो।

⚠ **एहतियात**

➥ *यह बात केवल मंदिर के महंत पर नहीं सभी धार्मिक स्थलों की देखरेख करने वाले लोगों पर लागू होती है।*

6. @हरिहर काका को किन यातनाओं का सामना करना पड़ रहा था और क्यों? **[CBSE 2017]**

7. ठाकुरबारी की स्थापना के बारे में गाँव में क्या कहानी चर्चित थी? **[CBSE 2011]**

उत्तर : हरिहर काका पाठ में जिस ठाकुरबारी की चर्चा की गई है, वह लेखक के एक छोटे से गाँव में थी। इसकी स्थापना कब और कैसे हुई, यह निश्चित तौर पर कोई नहीं जानता। गाँववालों का मानना है कि बहुत साल पहले एक संत गाँव में एक पेड़ के नीचे आकर रहने लगे थे। गाँव के लोगों ने चंदा इकट्ठा करके उनके लिए एक छोटा-सा मंदिर बनवा दिया। धीरे-धीरे मंदिर के प्रति लोगों की आस्था बढ़ने लगी। लोग वहाँ जाकर मन्नत माँगते, यदि उनकी इच्छा पूरी हो जाती तो वह धन्यवाद के रूप में धन-संपत्ति, जेवर, जमीन तक दान देकर आते। लोगों की बढ़ती हुई आस्था के साथ-साथ मंदिर का आकार भी बढ़ता गया और देखते ही देखते उसने एक विशाल ठाकुरबारी का रूप ले लिया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

8. हरिहर काका के ठाकुरबारी में चले जाने पर उनके भाइयों ने क्या किया? [CBSE 2012]

उत्तर : हरिहर काका अपने भाइयों के परिवार के साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे। समय के साथ साथ वहाँ उनका सम्मान घटता चला गया। न उन्हें खाने को पूछा जाता और न ही उनकी खैरियत पूछी जाती। हद तो तब हो गई जब घर में मेहमान के आने पर अनेक पकवान बने किंतु हरिहर काका को रुखा-सूखा भोजन दिया गया। उस दिन हरिहर काका गुस्से में घर से निकल गए और महंत मौके का फायदा उठाते हुए उन्हें ठाकुरबारी ले गया। जब यह खबर हरिहर के भाइयों को मिली तो वे अपनी पत्नियों पर खूब बरसे। उन्हें चिंता सताने लगी कि कहीं महंत की बातों में आकर हरिहर काका अपनी सारी जमीन ठाकुरबारी के नाम न कर दें। वे तुरंत ठाकुरबारी पहुँचे, हरिहर काका से माफी माँगी और उन्हें वापस घर ले जाने का प्रयास किया। किंतु यह स्पष्ट था कि उन्हें हरिहर काका की नहीं, उनकी जमीन हाथ से निकल जाने की चिंता सता रही थी।

9. ठाकुरबारी के प्रति लेखक के विचार अन्य गाँव वालों से किस प्रकार भिन्न थे?

उत्तर : लेखक के गाँव में ठाकुर जी का विशाल मंदिर ठाकुरबारी के नाम से बहुत प्रसिद्ध था। सभी गाँव वालों की उसके प्रति अपार श्रद्धा थी। हर त्योहार का प्रारंभ वहीं से होता था, सुख दुख में लोग सबसे पहले वही पहुँचते और मन्नत पूरी होने पर खूब चढ़ावा चढ़ाते। किंतु ठाकुरबारी के प्रति लेखक के विचार गाँववालों से काफी भिन्न थे। लेखक का मानना था कि जितने भी पेटू, चाटुकार और कामचोर लोग हैं वे सब ठाकुरबारी में पड़े रहते हैं। काम करना नहीं चाहते और वहाँ मुफ्त में बढ़िया-बढ़िया पकवान खाते रहते हैं। लेखक को वहाँ के पुजारी और महंत फूटी आँख नहीं भाते थे। उन्हें लगता था कि वह धर्म के नाम पर लोगों को मूर्ख बनाते हैं और अपने स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

10. ठाकुरबारी में हरिहर काका की सेवा के लिए क्या-क्या व्यवस्था की गई? [CBSE 2012]

उत्तर : हरिहर काका जब अपने भाइयों की पत्नियों के रूखे व्यवहार से नाराज होकर घर से निकले तो महंत को इसकी खबर पहुँच गई। मौके का फायदा उठाते हुए महंत हरिहर को रास्ते में ही लेने पहुँच गए और सीधा ठाकुरबारी में ले जाकर उन्हें वहाँ ठहराने का विशेष इंतजाम किया। तुरंत सेवकों को बुलाकर एक सुंदर कमरे में उनके लिए सोने की बेहतरीन व्यवस्था करवाई। रात्रि के भोजन में जो जो पकवान और मिष्ठान बनाए गए, वह हरिहर काका ने कभी नहीं खाए थे। ऐसा सेवा-सत्कार तो उनका कभी अपने परिवार में भी नहीं हुआ था जैसा ठाकुरबारी में हो रहा था। एक ही रात में हरिहर ने ठाकुरबारी में जो सुख और संतोष पाया था वह अब तक के जीवन में उन्हें कभी नसीब नहीं हुआ था।

⚠ **एहतियात**

➡ *वास्तव में यह सेवा नहीं बल्कि उन्हें बहलाने-फुसलाने का तरीका था।*

11. महंत जी ने हरिहर काका को एकांत में बैठाकर क्या समझाया? [CBSE 2011]

उत्तर : हरिहर का ठाकुरबारी में काफी आना-जाना था। जब भी खेतीबाड़ी से वक्त मिलता वह ठाकुरबारी में जाकर महंत के साथ धार्मिक चर्चा किया करते थे। किंतु इस बार महंत द्वारा हरिहर को ठाकुरबारी में ले जाने का उद्देश्य अपना स्वार्थ सिद्ध करना था। महंत ने हरिहर के सुख और आराम की अच्छी व्यवस्था करवाई और उन्हें धार्मिक प्रलोभन देने लगा। महंत ने कहा संसार में कोई किसी का नहीं है। तुम्हारे भाई तभी तक तुमसे संबंध बनाए हैं जब तक तुमसे उनका स्वार्थ सिद्ध हो रहा है। एक बार कहकर देखो कि तुम अपनी जमीन किसी और को दे रहे हो, वे तुमसे सारे संबंध तोड़ देंगे। अपना ध्यान ईश्वर में लगाओ। यदि तुम अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम कर दोगे तो ठाकुर जी के साथ-साथ तुम्हारी भी आरती गाई जाएगी, तुम बैकुंठ को प्राप्त करोगे। पूरे गाँव में तुम्हारी कीर्ति जगमगाएगी। तुम्हारे दोनों लोक सुधर जाएँगे। इस प्रकार महंत ने हरिहर को धर्म के नाम पर बहलाने-फुसलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

12. महंत ने हरिहर काका के साथ अलग-अलग प्रकार का व्यवहार किस प्रकार और क्यों किया? [CBSE 2013]

उत्तर : हरिहर काका एक मेहनती किसान और धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। ठाकुरबारी और महंत के प्रति उनके मन में असीम श्रद्धा और आस्था थी। जब अपने परिवार के प्रति हरिहर का मोहभंग हुआ तब महंत ने उन्हें सहारा दिया। वह उन्हें ठाकुरबारी में ले गया, उनके रहने की अच्छी व्यवस्था की। किंतु साथ ही धार्मिक प्रलोभन देने शुरू किए कि वह अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम कर दें क्योंकि इसी से उनका जीवन सुधरेगा। उनकी बातें हरिहर के दिल में उतर रही थीं किंतु अपनी जमीन के संबंध में वह कोई निर्णय लेना नहीं चाहते थे। काफी समय तक तो महंत हरिहर के साथ आत्मीय व्यवहार करते रहे किंतु जब दाल नहीं गली तो उनका एक नया ही रूप सामने आया। उन्होंने हरिहर का अपहरण करवा लिया और जोर-जबरदस्ती से उनकी जमीन अपने नाम करवाने की कोशिश की। हरिहर कभी सोच भी नहीं सकते थे कि वह महंत जिसे वह पूजनीय समझते थे वह इंसान इतना स्वार्थी और खतरनाक भी हो सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

13. हरिहर काका के प्रति उनके भाइयों के व्यवहार में समय-समय पर क्या परिवर्तन आए और क्यों? [CBSE 2014]

उत्तर : हरिहर काका के भाइयों का परिवार ही उनका अपना परिवार था। वे खुशी-खुशी उनके साथ रहते थे किंतु धीरे-धीरे वहाँ उनका मान घटने लगा। एक दिन जब घर में मेहमानों के आने पर बढ़िया पकवान बने और हरिहर काका को रुखा-सूखा दिया गया, तब तो उनका दिल ही टूट गया और वह गुस्से से घर से बाहर चले गए। इसकी खबर मिलते ही भाई उनके हाथ-पैर जोड़कर, पत्नियों की गलती के लिए माफी माँगकर, किसी तरह मनाकर घर वापस ले आए। अब वहाँ उनकी खूब खातिरदारी होने लगी। उनके पसंद का भोजन बनता, सब उनकी सेवा में उनके आगे-पीछे घूमते रहते। इसी बीच महंत ने जाल में फँसी हुई मछली को छूटता देखकर शर्मनाक कदम उठाया। उसने हरिहर काका का अपहरण करवा लिया। अब तो भाई चिंता में पड़ गए कि कहीं हरिहर की जमीन उनके हाथ से न निकल जाए। पुलिस का सहारा लेकर उन्होंने किसी तरह हरिहर को महंत के चंगुल से छुड़वाया। कुछ दिन जमीन अपने नाम करवाने के लिए राजी करने की कोशिश करते रहे किंतु हरिहर काका के न मानने पर उन्होंने भी महंत की ही तरह उनके साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया। इस प्रकार हरिहर काका के प्रति उनके भाइयों का व्यवहार पूरी तरह स्वार्थ से प्रेरित था।

14. @समाज में रिश्तों का क्या महत्व है? इस विषय में आपके क्या विचार हैं? [CBSE 2012, 11]

15. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा—'अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरता है। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है'?

उत्तर : एक समय था जब हरिहर काका एक सीधे-साधे भोले किसान थे। किंतु समय ने उन्हें ऐसे ऐसे अनुभव दिए कि वह चतुर और ज्ञानी हो चले। जब तक उनके मन में अपने भाइयों और उनके परिवार के प्रति मोह था और ठाकुरबारी और महंत के लिए असीम श्रद्धा और विश्वास, तब तक उन्हें अपने जीवन से भी लगाव था। ऐसे में व्यक्ति मृत्यु से डरता है। किंतु जब यह सच्चाई उनके सामने आ गई कि न तो भाई और उनका परिवार उनका अपना है और न ही महंत, सब स्वार्थ के ही साथी हैं, तब उनका खुद के जीवन से भी मोह समाप्त हो गया। अब वह बिलकुल बेफिक्र होकर एकांत में जीवन व्यतीत करने लगे क्योंकि मृत्यु का भय तभी तक था जब तक अज्ञान का पर्दा था, वह उठ जाने पर और ज्ञान हो जाने पर उनके दिल से मृत्यु का भय भी पूरी तरह दूर हो चुका था।

16. "भाई का परिवार तो अपना ही होता है, उनको न देकर ठाकुरबारी को अपनी जायदाद देना उनके साथ धोखा और विश्वासघात होगा।" कथन में निहित हरिहर काका के चरित्र की विशेषता से आप क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं? लिखिए। [CBSE 2015]

उत्तर : हरिहर के शांतिपूर्ण जीवन में खलल पैदा हो गया जब उनकी जमीन को देखकर सभी की नीयत खराब हो गई। एक ओर ठाकुरबारी के महंत उसे हथियाना चाहते थे तो दूसरी ओर हरिहर के अपने भाई उस जमीन को अपने नाम करवाना चाहते थे। महंत ने हरिहर को धर्म के नाम पर बहलाने-फुसलाने के अनेक प्रयास किए। महंत की बातें हरिहर के दिल में उतर रही थीं लेकिन वह अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम करने को बिलकुल तैयार नहीं थे। उनका मानना था कि भाई का परिवार ही अपना परिवार होता है। जमीन ठाकुरबारी को देना भाइयों के साथ धोखा और विश्वासघात होगा। हरिहर की ऐसी सोच पारिवारिक रिश्तों के प्रति उनकी निष्ठा और सच्चाई दर्शाती है। यह हम सब के लिए एक सीख है कि हमें अपने रिश्तों को निभाना आना चाहिए। यह ठीक है कि रिश्ते धन-दौलत पर निर्भर नहीं होने चाहिए किंतु रिश्तों के प्रति अपने कर्तव्य निभाने से हमें कभी पीछे नहीं हटना चाहिए।

17. परिवार की स्वार्थपरता तथा हरिहर काका की उपेक्षा एवं उचित देखरेख न किए जाने के वर्णन को पढ़कर आपके मन पर क्या और कैसा प्रभाव पड़ता है? अपने घर में आप ऐसी स्थिति को कैसे संभालते? [CBSE 2016]

उत्तर : परिवार मधुर संबंधों और भावनाओं का दूसरा नाम है। जब स्वार्थप्रियता परिवार के सदस्यों पर हावी होने लगे, तब परिवार बिखरने लगता है। हरिहर काका अपने भाइयों के परिवार को ही अपना परिवार समझते थे और खुशी-खुशी वहाँ रहते थे। किंतु जब उनकी उपेक्षा होने लगी, मान कम होने लगा, देखभाल तो दूर दो वक्त के भोजन के लिए भी वह तरसने लगे, तब उनका मन टूट गया। यह पढ़कर बहुत दुख होता है कि एक ही छत के नीचे रहने वाले लोग एक दूसरे के प्रति ऐसा रुखा व्यवहार कैसे कर सकते हैं।

यदि हमारे परिवार में कभी ऐसा होने लगे तो हम सभी को समझाने का प्रयास करेंगे। हर व्यक्ति को एक न एक दिन वृद्ध होना है। जब शरीर कमजोर होने लगता है, तब सहारे की जरूरत और अधिक हो जाती है। ऐसे में यदि घर के लोग उपेक्षापूर्ण व्यवहार करने लगें तो अधिक दुख होता है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हम किसी के साथ वह व्यवहार न करें जो हम अपने साथ होते हुए नहीं देख सकते।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

18. अकेले होने के कारण हरिहर काका को किन-किन कठिनाइयों से गुजरना पड़ा? इन कठिनाइयों के सामने समर्पण करने की बजाय हरिहर काका को साहस से किस प्रकार इसका सामना करना चाहिए था? [CBSE 2016]

उत्तर : 'हरिहर काका' नामक कहानी एक ऐसे वृद्ध व निस्संतान व्यक्ति की कहानी है, जो दोहरे शोषण का शिकार बनता है। वह परायों के साथ-साथ अपनों द्वारा भी शोषित व प्रताड़ित किया जाता है। जब उसके समक्ष अपने सगे भाइयों का स्वार्थपूर्ण चेहरा उजागर होता है, तो उसका मन कड़वाहट से भर जाता है। वह निर्णय लेता है कि अपने जीते-जी वह अपनी संपत्ति किसी के नाम नहीं लिखेगा किंतु अपने इस निर्णय की उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। जीवन के अंतिम क्षणों में एकांतवास करना पड़ता है। अपनों के स्नेह व आदर की छाँव में रहने के स्थान पर उनके आतंक व भय से स्वयं को सुरक्षित रखने का प्रयास करना पड़ता है और पुलिस द्वारा तैनात चार जवानों की निगरानी में रहना पड़ता है। यदि हरिहर काका साहस से काम लेते तो बहुत अच्छा सामाजिक जीवन व्यतीत कर सकते थे। वे अपनी वसीयत बनवाते। जिसमें सेवा करने वाले के नाम ज़मीन लिखने का नियम दर्ज करवाते। या शेष जीवनयापन हेतु ज़मीन का कुछ हिस्सा अपने पास रखते और बाकी का उचित विभाजन कर देते ताकि परिवार भी खुश होता और वह जमीन समाज के काम भी आ पाती।

19. हरिहर काका कहानी के मुख्य पात्र हरिहर सब कुछ होते हुए भी एक यंत्रणा पूर्ण जीवन जी रहे थे। मान लीजिए आप भी उसी गाँव के निवासी होते तो उनको न्याय दिलाने के लिए आप क्या उपाय करते? [CBSE 2017]

उत्तर : हरिहर काका के पास किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। उनके परिवार के पास 60 बीघा जमीन थी। यदि चारों भाइयों में बँटवारा होता तो 15 - 15 बीघा जमीन सबको मिल जाती। उस पर खेती करके वह अपना जीवन बड़े सुखपूर्वक व्यतीत कर सकते थे। किंतु जमीन के लालच ने सारे संबंध बिगाड़ दिए और सुख-चैन छीन लिया। महंत और हरिहर के भाइयों के मन में तो लालच था ही किंतु हरिहर को भी शायद अपनी जमीन से बेहद मोह था। वे जीते जी उसे किसी के नाम नहीं करना चाहते थे। वे डरते थे कि अन्य गाँव वालों की तरह उनकी भी दुर्गति न हो।

यदि मैं उस गाँव का निवासी होता तो मैं हरिहर काका को अवश्य समझाने की कोशिश करता /करती कि इन भौतिक वस्तुओं से बँधे रहने से कभी किसी को लाभ नहीं हुआ है। बेहतर है कि शेष जीवनयापन हेतु वे ज़मीन का कुछ हिस्सा अपने पास रख लें और बाकी जमीन का उचित बँटवारा कर दें ताकि वह ज्यादा से ज्यादा लोगों के काम आ सके। उनके परिवारवालों को भी समझाने का, हरिहर काका के प्रति अपना कर्तव्य याद दिलाने का प्रयास करता/करती। आवश्यकता होने पर प्रशासन की मदद भी लेता/लेती। कानूनी तौर पर उन्हें सहायता प्रदान करता/करती।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in